

| | Überschrift des Lesestückes. | Seite. |
|--------------------------------|---|--------|
| Uhland, F. | | |
| | Nr. 136. Der Schenk von Limburg | 290 |
| | „ 141. Graf Eberhards Weiskorn | 296 |
| | „ 186. Zimmerpruch | 381 |
| Wilmar, A. F. C. | | |
| | Nr. 75. Siegfried und Kriemhild | 141 |
| Vogl, J. H. | | |
| | Nr. 97. Heinrich der Voglar | 214 |
| | „ 119. Das Erkennen | 260 |
| Volkslied. | | |
| | Nr. 184. O Straßburg | 377 |
| Wackernagel, W. | | |
| | Nr. 182. Zum neuen Jahr | 376 |
| Wagner, H. | | |
| | Nr. 130. Die Sagopalme | 279 |
| Wildenbruch, E. von. | | |
| | Nr. 135. Belehnung des Burggrafen Friedrich von Nürnberg durch Kaiser Sigismund mit der Mark Brandenburg | 288 |
| Willich, E. von. | | |
| | Nr. 234. Das Lieblingslied Kaiser Friedrichs | 476 |
| Wunderhorn, des Knaben. | | |
| | Nr. 116. Wachtel-Wacht | 257 |
| | „ 183. Der Schnitter Tod | 376 |